Vidhyayana - ISSN 2454-8596

An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal

www.vidhyayanaejournal.org

Indexed in: ROAD & Google Scholar

पुराणों में सोमनाथ - प्रभास क्षेत्र की महीमा

डॉ. नीलाबेन एस. ठाकर

आचार्य,

कविश्री दाद सरकारी आर्टस/ कॉमर्स कॉलेज, पड़धरी, (राजकोट)

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

प्राचीन पुराणकारो के मत से भारतवर्ष के ट्रीप सहित नौ भाग है। नैऋत्य मे जो भाग हो वह 'सुराष्ट्र' एसा वराह मिहिर और अन्य पुराणों का मानना है। सुराष्ट्रके कुल नौ भाग है इसमें सागर समीप जो भाग है वह प्रभास पुराणोंमे सोमनाथ प्रभासको आनर्त सार (आनर्त देशके साररूप) कहते है। कई विघ्वान उतर भारत के भागको “आनर्तके" और दिपकल्प माग को "सुराष्ट्र" कहेने का योग्य मानते है। यह वो भूमी है जहां श्री कृष्णनेभी शरीर त्याग करने के लिये अच्छा स्थान माना एसी भुमी प्रभास प्राचीन समयसे ऐतिहासीक, धार्मीक, सांस्कृतिक आदी अनेक दष्ट्रिकोण से महत्व की है।

सोमनाथ प्रभास क्षेत्र भारतकी पश्चिम दिशामें गुजरात राजय के सौराष्ट्र विभागमे जुनागढ जिल्ला में २०.२५ अक्षांश औ२ ७०.२४ रेखांश पर हिंदी महासागर के अरबी समद्रके तीर पर आया हुआ है। (२) प्रभास सोमनाथ का क्षेत्रफळ १०९ ओकर २६ गुठां है, और आसपास की सीमा का क्षेत्रफल ८२३९ ओकर २६ गुंठा (ओकमाप) है। सद्रत साक्षरवर्य श्री शंकर प्रसाद हरप्रसाद देसाई उनके उर्दु काव्य “तस्लीमे वतन” मे अपनी मातृभुमी प्रभास का गुणगान इस तरह वर्णन करते है।

जब रुओ पाक आलम पें शहेर एक नहीं था।

निनावे बाबीलोना रुमो दमिश्क नहीं था

नही था प्रयागो काशी जब द्वारिकाभी नही था ।

पू२ नूर अय मुन्नवर अशहरतुं शहर यही था,

गुंजीथी तेरी गलीओमे बेद की तिलावत,

शास्त्रोकी शराअत सामेशकी इबादत ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

जब पृथ्वी पर निनावा, बाबीलोन, रोम, दमास्कस, प्रयाग, काशी, और द्वारिका अभी नही बसे थे और प्रख्याती मे नही आये थे तब परम प्रकाशीत नगरोका नगर प्रभास मशहुर था। इसकी गली गली वेदो के मंत्रोच्चार से गूंजती, वहां शास्त्रोकी चर्चा होती रहेती थी और भगवान सोमनाथ की पुजा होती थी ।

विक्रमकी नवमी सदीमें भगवान सोमनाथ का क्षेत्र पूर्ककला से खीला हुआ था। इसके वैभव ऐश्वर्य, महता और पवित्रता से आकर्षीत होकर भारतभरके प्रजाजन यहां पर यात्रार्थे आते थे। प्रभासकी कीर्ती सागरपार होकर हिमालय के पहाड भेदकर ईरान, अरबस्तान, और अफघानिस्तान के प्रदेश तक फैली हुई थी।

भगवान सोमनाथ द्वादश जयोतीर्लीग के प्रथम अष्ठिाता, भालकार्तीथ, सरस्वती नदीका संगम स्थान, यात्राधाम, संतो तपस्वीओकी भुमी और अनेक ऐहिासीक व्यकितओ से जुडा हुआ आदी कारणो से प्रभासका महत्व अनन्य है। जो सर्व विदित है। सुर्य वंशीय आर्योने प्रभास को मास्कर तीर्थ सुर्यतीर्थ अग्नितीर्थ[1] आदी नाम दीये है। चंद्रवंशीओने उसे सोमतीर्थ या चंद्रतीर्थ[2] कहा है ब्राहमणोने इसे सरस्वतीतीर्थ कहा है। प्रभासका द्रवीड नाम मीनुर था। इस बंदर गाह से द्रविड कालीन साहसिक नाविक लोग वर्तमान ईरानी अखात से अरबस्तान, पेलेस्टाईन, ईरान आदी देशो के साथ व्यापार करते थे। और अन्य देशोके प्रजाजनो के साथ संस्कृति की भी जाने अनजाने आपले करते थे। नाविको के समुद्र गमन के परिणाम स्वरूप बेबीलोन मे बसी प्रजाके संपर्कमे भी वे आये थे (३) और अमुक अंश तक स्थानांतर करते थे । जीसे आधुनीक रूप मे "डायसपोरा" कहा जाता है। वह प्रकिया गुजरात मे सालो से शुर हई थी। ऐसा कहा जा सकता है ।

[1] गच्छेत प्रकाशने तीर्थ प्रभासं भास्करधृति ।
इन्द्रस्य दयितं पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ।।
[2] तत्रोपगच्छेद राजेन्द्र सोमतीर्थमुतमम् ।
तत् संनिहितो भगवान सत्यवेम हुताशन: ।।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

सुर्यवंश मे सोमनाथ :-

सुर्यवंशीओ मीनुर मे स्थाई हुऐ और सता प्राप्ती होने के बाद इन्होने शुध्ध संस्कृत और आर्य संस्कृतिका भी प्रचार कीया। यह कार्य पर्यंत इन सुर्यवंशीओने मीनुरका नाम 'प्रभास' कर दीया। इस स्थल को तीर्थ बनाकर इसका नाम "भास्करतीर्थ", "सुर्यतीर्थ " और " अग्नितीर्थ" २ख दीया था ।

चंद्रवंश में सोमनाथ :

सूर्यवंशीओ सौर वर्ष मे और चंद्रवंशीओ चांदवर्ष मे श्रध्धा रखते थे पांडवोने अज्ञात वर्ष मे रहने के समय की गणना चांद वर्ष के ३५४ दिन याने एक वर्ष माना है। यह हकीकत भीष्मने महाभारतमें दलील से १ वर्षके कितने दिन होते है यह विवादास्पद घटना का ठकेल दिया था। चंद्रवंशीय आर्यो इरान के बंदरगाह से जलमार्ग पर मीनुर बंदरगाह पहुंचे थे ऐसा ठल्लेख ऋग्वेद १,१७४,९ और ऋग्वेद ६,२१,१२ के श्लोकोसे मीलते है। वेद और महाभारत के प्रमाणोसे सिध्ध होता है कि चंद्रवंशीय आर्यो पैकी यदु और तुर्वसु इरानकी ओर से जलमार्ग से आकर प्रभास मे यानी सोमनाथ क्षेत्रमे बसे थे।

जातककथा :

अन्य प्रमाणो में देखे तो सागरतट में बसे आर्य, अनार्य, अर्ध आर्य, आदि साहसीक थे। समुद्र मे वेपारार्थे नौकायान द्वारा विदेशो से चीज वस्तुओका आदान प्रदान करते थे। समुद्र प्रवास के साहस से व्यापार व्यवसार मे प्रावीण्य पाया था। ऐसे नाविको और व्यापारीओने चंद्रवंशीय यदु तुर्वसु को समूद मार्ग से लाये थे। एक यह मत है कि यदुवंश में से ठतरी ईइ जाती जयु (यहुदी) है। जो यदु पेलेस्टाईनमे बसे थे । पराणोकत वर्णनोमे गुजराती माषा मे "असलनावारा" (यानी जो इस समय मोजुद थे) लेखकने समय काल नही दिया, किन्तु बौध्ध, बाबे जातक कथाओमे किये हुऐ वर्णन मुजब कई भारतीय वेपारी समद्मार्ग से बाबेरु अर्थात बेबीलोन गये। साथ मे मोर और कौआ साथ मे लेकर गये थे। तब बेबीलोनवासी ठसके रूप और कला

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

पर मुग्ध हो गये थे । एक सहस्त्र मुद्राके दाम से इन्होने मोर खरीद लिये थे। ऐसा The Jatak & Stories of Buddha" Former Burths Storie No. 339 मे उल्लेख पाये जाते है । जातक कथा का समय आशरे पांच हजार पूर्वे की मानी जाती है।

ऋग्वेद में:

पण्णिओ व्यापारीका दुसरा नाम था। अतीलोभी, वैश्य, व्याजखाठ, नफा खोरी के कारन इसे स्वदेश छोडकर परदेश जाने की आज्ञा हुई थी एसा जो वर्णन है वे द्रविड थे। इनमे से अनेक श्रीमंत, धनाढ्य, साहसीक वैज्ञानीक पण्णीभी थे । Father Hears पण्णीओ को इस समय के पण्ळीके २प मे व्यापारीओ को मानते हे। समुद सफर करते हुऐ सफल नाविको इस भुमीके पदार्थोका व्यापार करते थे। वे भारत से पश्चिम के देशोमे बहुधा आवन जावन करते थे। इन लोगो को अपना देश कहां है ? पूछने से वे उतर देते थे कि जहाँ सुर्य उगता है वहां पूर्व मे हमारा देश है। हस अर्थमे देशकानाम पश्चिमवासीओने " सूर्यराष्ट्र" अथवा सु-राष्ष्ट्र नाम दिया था। इन्होने यह देश में आकर सुराष्ट्र नाम स्थिर कर दीया था, जहा सोमनाथ प्रभास क्षेत्र आया है।

महाभारत में सोमनाथ क्षेत्र :

महाभारतमें प्रभास सोमनाथ क्षेत्रका यही नाम कयों पडा ? इसका विवरण भी मिलता है। इस वर्णन करते हुऐ पूरी वार्ता दि गई है। वे यह है की दक्ष प्रजापतिको २७ कन्याऐ थी। हनमे से रोहिणी सर्वे श्रेष्ठ थी । २७ कन्याऐं चंन्द्रके साथ विवाहीत कि गई। फिरभी चंद्र रोहिणी के साथ जयादा समय रहेता था । २६ कन्याओने पिताको यह बात बताकर कहा की चंद्र रोहीनी के साथ ही हंमेश रहेते है और अमारी और समभाव नही रखता। दक्षने यक्षको चंद्रके पास भेज दिया, चंद्रको क्षयका रोगी बना दिया दिन प्रतिदिन वे क्षीण होता गया। सर्व देवताओके द्वारा दक्ष के पास चंद्रके आरोग्यकी मांग कि गई। तब दक्षने उपाय बताया कि तमाम अन्य पुत्रीओ के साथ चंद्रं समदष्टि से रहे और सरस्वती नदी के उतरतीर्थमे स्नान करने से वे

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

वृष्धि प्राप्त कर सकेगा और पूर्णमासमे से आधामास क्षय और आधा वृष्धि पायेगा।" तत्पश्याद वे सरस्वती संगम स्थानमे जाकर स्नान पूजन करने से पूर्ववत बनता गया। चंद्रे परम प्रभा पाई इससे ये तीर्थ "प्रभास" नामसे जाना गया यही कथा शल्यपर्व के अध्याय ३५ मे भी है। शांतिपर्व के अध्याय ३४५ में भाषांतरभी है । यह क्षेत्रको पहेले 'हिरण्यरस 'स्थल से पहेचाना जाता था । जहां हिरण्या सरस्वती का संगम होता है प्रभास से ३ माईल दूर हीरणासा और सरसावा नामक गांव आज भी है।

तद उपरांत यदुवंशका अंत करने के लिये भगवान श्रीकृष्णने स्वधामगमन के लिऐ कया किया? ईस प्रश्न के उतर मे परिक्षत राजाने पूछा तब शुकदेवने कहा कि 'द्वारका' मे उत्पात देख कर भगवानने यादवो को प्राची सरस्वती बहती है वह शंखोद्वार मे जाने की आज्ञा कि और कहा की प्रभासक्षेत्र में जाकर देवताओका पुजन करके वहां दान धर्म करो। सब प्रभास गये मायासे सबके अंदर कलह लगाकर कुल नाश किया बलरामने योग से समुद्रकिनारे पृथ्वी लोकका त्याग किया। उसके बाद श्री कृष्णने पीपल के वृक्ष के नीचे झरा नामक पारधीने मृग मानकर कृष्णा२विंद का निशान लगाने से स्वधामगमन किया। कृष्णको दारुक सारथि खोज करने निकला था वह मिला तब कृष्ण धायल थे। इसवकत सबको द्वारिका जाने को कहा और भविष्यवाणी कि 'समद् द्वाराका को सातवे दिन डूबा देगा' । उसके बाद वसुदेव, देवकी, रोहीणी सभीने प्राण त्याग दिीये बाकी सबको अर्जुन इन्द्रप्रस्थ ले गया। अर्जुनद्वारा कृष्णके स्वधामगमन का प्रसंग सुनकर पांडवोने परिक्षित राजाको राजय सोप कर सब हिमालय की और चल पडे (४) यही सब प्रमाणो का आधार मिलता है। इस अंतर्गत प्रभास पवित्रतीर्थ होने के अनेक कारण मिलते है।

चंदूने यह क्षेत्र पर दक्षकी आज्ञासे शिव आराधना करने से शिव प्रसन्न हुऐ और सोम (चंद्र) के नाथ उपर सेही शिवलींग सोमनाथ सोमेश्वर आदी नामसे प्रचलीत हुआ ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

भगवत गीता के १० ११ वें दशम स्कंध मे १०:६४:३४ और२ ११:२९:४९ के अनुसार श्रीधर स्वामीने भगवानके स्वधामगमन वर्णन भा : ११:३० के आरंभके श्लोक १, २ मे लिखा है कि कृष्णने कर्मके बंधन, यदुकुल के शाप और ऋषिओकी यादवो द्वारा मश्करी जैसे निमितो से यादवकुल नष्ट हुआ एसा कहकर कहा कि ऋषि ब्राहमणो आदी को अन्याय करनेवाले कुलका नाश होता है ।

सुर्य- चंद्रकी महतम शकितका लाभ प्रभास भूमी को प्राप्त है । सरस्वती कपिला, हिरण्या नदीका, संगमस्थान और अतीशय तेजस्वी, भासवान स्थल का दुसरा नाम प्रभास है। सोमतीर्थ कृष्णके कारण कुष्णतीर्थ' भी माना जाता है। ईस प्रकार शैव तीर्थ, सौर तीर्थ, कृष्णतीर्थ, ऐसे 'त्रिवेणी तीर्थ' के विशेष रूप मे प्रभास सोमनाथ 'त्रिवेणी तीर्थ' बना हुआ है ।

पुराणोमे प्रभास का महत्व :-

स्कंन्द पुराणमे प्रभास महिमा :-

स्कंदपुराणमे ' प्रभास खंड नामक पुरा प्रकरण है। जिसमे प्रभासकी भुगोल, पवित्र स्थान, वनस्पति, वातावरण, ऋतु वर्णन आदि है। स्कंदपुराण कब रचा गया यह मतभेद है। परंतु सम्राट स्कंदगुप्त के समयमे इनकी आज्ञा से अवन्ती, रेवा, अर्बुद, कुमारकिा, वडनगर, प्रभास आदी अगत्यके स्थानो के इतियास भूगोल लिखा गया था वह ऐकत्र करके पुराण २चा वह ही स्कंदपुराण । वेद व्यासने भी एक स्कंदपुराण लिखा हुआ था ऐसा एक मत है ।

स्कन्द के वर्णन अनुसार

पूर्वे तत्पोदकस्वामी पश्चिमे माधवः स्मृतः ।

दक्षिणे सागर स्तद्व मद्रान दयुतरे मत : ।।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

(पूर्व मे तुलसीश्याम, पश्चिममे माधवपुर, दक्षिणे समूद और उतरे भादर नदी के बीच आया हुआ यह प्रभास क्षेत्र है)

इस पुराणमे प्रभास उपरांत और देवस्थानोकी एक स्थल से दूसरे स्थलके अंतर को धनुष्य के नाप से बताकर पुरा चीतार दिया है। मंदिरोका नगर कहेकर प्रभासके साथ १३४ शिवमंदिर, ५ विष्णु मंदिर, २५ देवी मंदिर, ५ गणपति मंदिर, १६ सुर्य मंदिर उपरांत क्षेत्रपाल, नाग, आदी अनेक स्थल दर्शाये है। त्रिवेणी नदी से नगरापुर तक सरीताके घाटका विशेष वर्णन है । जिसमे १६ कुंड थे। मीठे पानी के जलवाले गौरी तपोवन कुंड, रूद्रकुंड, सुर्यकुड, केदार कुंड, ब्रहमकुंड, कामकुंड, आदी मुख्य थे । यहां की सरस्वती नदी को कौमार्यवस्थावाली सरस्वती माना जाता हे : कयुंकी ईसका पानी सीधा भुमी पर आकर पीछे मुडकर फिर हिरण्या नदी से समुद्र मे जाता है (५) उसके पश्यात हिरण्या नदी से समुद्र में जाता है । सीधा समुद्रको न मिलने के कारण यह मान्यता है ।

वामन पुराण :

ईस पुराणके ३४ वे अघ्यांयमे दर्शाया गया है कि सोमतीर्थ मे दर्शन करने से राजसुय यज्ञ जीतना फल प्राप्त होता है । और फिर मनुष्यजन्म धारण करने से मुकित मिल जाती है, वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है । इस पुराणमे ८४ वे अध्यांय मे कहा है की प्रहलादने पितृ हत्याका पातक दूर करने के लिऐ प्रभास क्षेत्रमे जाकर सरस्वती मे स्नान करकर सोमेश्वर महादेवके दर्शन किये थे।

गरूडपुराण :

ईस पुराण के पूर्वार्धमे ८१ वे अघ्यांय मे यह क्षेत्र उतम स्थान होनेका और महादेव सोमनाथ का उल्लख करके ईस स्थान के गुणगान गाये है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

कुर्म पुराण :-

सिध्धाश्रम से ३४ वे अध्याय मे इस तीर्थक्षेत्रका उल्लेख बताया गया है 1 शंकर भगवान के सोमेश्वर स्वरुप के तीर्थका दर्श करने से अनेक आधी व्याधी उपाधी से मुकित मीलती है। अक्षयपद मिलता है और शिवलोक मे स्थान प्राप्त होता है ऐसा वर्णन कहा है ।

लींग पुराण, विष्णु पुराण, मविष्यपुराण, मत्स्यपुराण, पदमपुराण, देवी भागवत, श्रीमद् भागवत, आदि अनेक पौराणिक ग्रंथो मे सोमनाथ प्रभास क्षेत्र का गुणगान किया है ।

चरक संहिता :

इ.स. ८० मे पुरुषपुर (पेशाव२) मे कनिष्ककी राजसभामे चरक मुनि थे । जो महाभारत से पहेलेका ग्रंथ माना जाता है ऐसा चरकसंहिता ग्रंथमे वर्णन है कि चंद्र काम वासनासे क्षीण हो गया था । इनका आरोग्य राजयक्षमा रोगसे लुप्त होता जा रहा था। अश्विनीकुमारोने इसे रोग मुकत किया था (६) जीसका प्रमाण इस श्लोक से मिलता है ।

स विमुकतग्रह चंद्रो विरराज विशेषत : T

ओजसा वर्धि तो डश्विम्यां शुध्ध सत्यमचाप च : ।।

व्याकरण :

प्रकर्षवाचक उपसर्ग 'प्र 'औ२ कियापद 'भाम' से बने है। यह स्थल जो अती प्रकाशमान हो वह प्रभास कहा जाता है। भास्कर इनके किरण समुद्र पर बरसाकर उसका प्रतिबिंब से जो स्थलको प्रकाशीत करे वह प्रभास एसा वर्णन मीलता है ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

प्रभास के पूर्वनाम खातरी पुर्वक ईतिहास लेखक श्री शंभुप्रसाद देसाई ने प्राप्ति स्थान दिये बगैर अनेक बताये हे कि आध्यकल्प में प्रमासका नाम प्रमोद था इसकेबाद के कल्पो मे नंदन, शिव, उग्र भट्रिक, समिधान, कामघ, वैश्वरूप, श्री पदमनाभ, मोक्ष मार्ग, सुदर्शन थे ऐसा बताते है।

पौराणीक कथाओ मे प्रजापति के पुत्र ८ वसुओ के नाम धर, ध्रुव, सोम, अह, अनिल, अनल, प्रत्युष, और प्रभास थे जैसा कहते है । आठवे वसुं परसे 'प्रभास' का नाम आया हुआ है ।

श्री सुक्त :

इस सूक्त मे प्रभास और सुराष्ट्र प्रांत का उल्लेख है। तांत्रीको यह सुक्ता उपयोग करते है। सोम के तांत्रीक प्रयोगसे प्रभास नाम आया हुआ है ऐसा ज्ञात होता है ।

विवेचन :

पुराणो मे प्रभास के लिऐ जो उल्लेख प्राप्त है इसे लोककथा जैसे श्री शंभु प्रसाद देसाई मानते है। फिर भी महाभारत, व्याकरण, पौराणीक ग्रंथो, आदी मे प्रभासका उल्लेख प्राप्त होता है।

द्वारका महात्मय मतानुसार नारद करते हे कि :

सिंह राशी मे वृहस्पति हो तब गोदावरी नदी मे, कुंभ राशी मे हो तब हरिद्वार मे, सुर्य ग्रहणे कुरुक्षेत्र मे, और चंद्र ग्रहणे काशी क्षेत्रेमे स्नान करने से दान करने से जो पुण्य मिले उससे सौ गुना पुण्य प्रभास मे दिन प्रतिदिन मिलता है और प्रभास मे जो सरस्वती है वहां स्नान करने से पापिष्ट मनुष्य भी मोक्ष पाता है।

ऋग्वेद, (८) के ७ वे खील सूकत में वर्णन है कि

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

यत्र प्राची सरस्वती यत्र सोमेश्वरो देव : ।

तत्र मा अमृतम् कृधि इन्द्रा येन्दो परिस्त्रव ।।

लोकोकित मे थी प्रभासकी महीमा है जैसे

सौराष्ट्रे पंचरत्नानी नदी नारी तुरंग मा

चतुर्थे सोमनाथं च पंचमं हरिदर्शनम ।।

ईस क्षेत्र अनेक व्यकितत्वो के साथ जुडे हुऐ है। कही कही अतिशयोकित होने की भी संभावना हो सकती है।

ऋषिओ मे वशिष्ट, मरिची, नारद, सनत कुमार, कश्यप, गालव, सुब्रमण्य, गर्ग, पुलह, दुर्वासा, विश्वामीत्र, उशनसकतु, सालंकायन, अग्निध्र अंगीरस, वाल खिल्य, दधिची, मार्कडेंय, अनेक ऋषी प्रभास मे आये थे ऐसा स्कंद पुराणमे प्रभास खंडमे से जानने को मिलता है।

श्री रामचंद्र भगवानने वनवास दरम्यान प्रभास मे आकर गणपतीजीकी पुजा कि थी, प्रभासके प१ वे अध्यांय मे गोराभाई रामजीभाईने भाषांतर करके यह बाताको अतिशयोकितसभर बताई है ।

रावण विषयक प्रभासखंड मे वर्णन है कि पुष्पक विमान से आकाश मार्ग द्वारा प्रभास उप२से पसार होते वक्त भगवान सोमेश्वर कि पुजा कि थी।

उत्तानपाद राजाका पुत्र ध्रुव विष्णुं उपासक था किरभी शिवजीने उसे आशिर्वाद दिये थे। ध्रुवने प्रभास क्षेत्रमे नालेश्वरका शिवलींग स्थापन किया था। ये शिवलींग ध्रुवका होने से ध्रुवेश्वर से पहचाना जाता है ।

पांडवो यहां पर आये थे, पांडवो की एक प्रतिज्ञा थी कि दोपदी के पास उनका एक भाई हो तब दुसरे भाई को जानेकी मनाई, और फिरभी जो जाये उन्हे १ साल शिक्षाके रुप मे दुर बसने चले जाना, इस प्रकार अर्जुनने

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

प्रभास पर निवास किया था। तब वहांपर श्री वासुदेव उसे मिलने आये थे। महाभारत के आदिपर्व अंतगर्त अर्जुन वनवास पर्व के अध्याय २१८, और ११८ मे दर्शाया है। शल्य, विदूर, भिष्म-पितामह, आदि प्रभासमे आये थे। यादव, बलराम, प्रहलाद, का अगाउ उल्लेख आ गया है । बलरामने मदीरापान के नशेमे अनेक कथाकार सूतो को मार डाले थे। प्रश्याताप के रुपमे प्रभास मे आकर इन्होने तप किया था।

जैनोका तीर्थ यह क्षेत्र माना जाता है, क्योकी वे मानते हे कि यह क्षेत्र मे चंद्रंशेखर, चकधर चंन्द्रयशा, सोलहवे तिर्थकर श्री शांतीनाथ, प्रभुके पुत्रने यहा पर 'अठाई महोत्सव' किया था २० वे तीर्थकर मुनि श्री सुव्रतस्वामी, दशरथ, हस्ती सेन, चामुड रांज, सिध्ध राज, कुमारपाळ , जगडुशाह, वस्तुपाल, अनेक जैनो ने ईस क्षेत्रका महीमागान किया है।

पुष्टिमार्गी वैश्नव भी यह तीर्थ को 'श्री महाप्रभुजीकी बेठक' मानते है जहां जहां प्रभु विचरे थे वह बेंठक मानी जाति है। इसका ग्रंथ 'बैठक चरित्र' से प्रसिध्धि है।

मुस्लिमो के पवित्र स्थानो मे काजीकी मस्जीद, वडवाली मस्जीद, जैसी अनेक मस्जीदोका उल्लेख प्रभास अंतगर्त प्राप्य है। अनेक दंडी स्वामीओ के साथ यह क्षेत्र झुडा हुआ है ।

अनेक आधुनीक व्यकितत्वो मे लेखक, कवि, वैद, राजा, इतिहास प्रसिध्ध व्यकितओ, शंकराचार्य, संगीतज्ञ, जयोतीषी, वेदज्ञानी ब्राहमणो, व्यापारी स्थापत्यक, सभी प्रकारकें प्रसिध्ध लोग इन क्षेत्र से जुडे हुओ है ।

शीलालेख, ताम्रपत्र, चैत्य, शिल्प, आदि स्थापत्य कलाके क्षेत्रमे भी इस क्षेत्रने खयाती प्राप्त कि है। बंदर, सरीता, मंदीर, वीरोकी भूमि जैसा सोमनाथ-प्रभास क्षेत्र आजभी महिमावंत है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

संदर्भ - सुचि

१) २त्नमणीराव भी. जोटे' सोमनाथ' गुजरांत साहित्य सभा, अमदावाद, इ. स. १९४९ पेइज ४

२) शंभु प्रसाद हरप्रसाद देसाई प्रभास और सोमनाथ' सोमनाथ दितिीय आवृति इ.स. १९९८ पेइज ४८०

३) अॅजन पेइजः ३

४) स. पा. प्रा आर. जे. जोशी 'आचमनीयम' (संस्कृत लेख संग्रह) सौराष्ट्र विश्व विद्यालय अध्यापक संघ घ्वारा प्रकाशीत इ.स. २००१ ' श्रीमद् भागवत मे निरूपीत प्रभासलीला' डी. जे. जी. पुरोहीतका शोध लेख पेइज ६७, ६८

५) शंभुप्रसाद हरप्रसाद देसाई 'इतिहास दर्शन' भाग २ जुनागढ इ.स. १९७९ पेइज ९७

६) डी. प्राणजीवनदास महेता कृत भाषांतर 'चरक संहिता' प्रकरण ८ गुलाबकुंवरबा आयुवैदिक सोसायटी, जामनगर, घ्वारा प्रकाशीत पेइज ३

७) पुर्वोक्त ' प्रभास और सोमनाथ' पेइज ७१

८) पुर्वोक्त रत्नमणीराव भीमराव जोटे 'सोमनाथ' पेइझ ७१